

अथ श्रीकृपानिवासजीक
 तभावनासतकलिरव्यते ॥ दोहा ॥ प्रथमहि श्रीप्रसादजी
 सकलसखीशिरमौर ॥ जिनके कर विहरत सदा दंपतिश्या
 मल गौर ॥ १ ॥ चंद्रकलागुन आगरी रहसि विचरु न जा
 नु ॥ सुरचिताडित्नीलातन की सेवति समय समान ॥ २ ॥
 विमला विमल विहार मे रहति सदा लयलीन ॥ रहसि सं
 पदात्नातन की बाढति चाह न चीन ॥ ३ ॥ मदन कलार स

॥ श्री ग. ॥
॥ ११ ॥

मदनकी मदन युगलर सहन ॥ वदन प्रसंसा को करै अडिग
भावर सवेत ॥ ४ ॥ बिष्णु मोहिनी एकर समो हिरही पद कंज ॥
सिय वल्लभ की माधुरी भरी धरी दृग पुंज ॥ ५ ॥ उर मिला अम
निसुख बसै पिय प्यारी अनुकूल ॥ जुगल वदन निरखत व
लै चंदक मोहिने फूल ॥ ६ ॥ चंपक लार सचोप की माने
भरी भंडार ॥ लाल लालिनी मुख सदा देखति नित्य बिहा
र ॥ ७ ॥ रूप लता विच रूप की परम उपासक एक ॥ राम ज

नकीमहलकीटहलजुकरनविवेक॥८॥अष्टसखीयेमा
 यहैऔरोसखीअनंत॥इनकीकपाकटासनेसुद्धभयेव
 रुजंत॥९॥जोचाहैसियलालकीरहसमाधुरीकेल॥नौस
 वआसविहायकेकीजैइनसेमेल॥१०॥श्रीप्रसादप्रसादकर
 अष्टसखीगुनपाय॥अलिनेवासजिनकीमयामहलमाधु
 तिपाय॥११॥प्रथमपाठइनकोकरैपीछेऔरकराय॥रहस
 माधुरीउरफरैसहलमहलकोजाय॥१२॥प्रथमचाहसीला

अ. ५.

॥२॥

सुभागगानकलासुप्रवीन॥ जुगलकेलिरसनारसितरासरह
 सरसलीन॥ १३॥ हेमाकरवीरोसदाहसिदंपतिमुखदेत॥ संप
 तिरागसोहागकीवडभागिनिउरहेत॥ १४॥ क्षेमासमयप्रबंध
 मेवसनविचित्रबनाय॥ सुरचिसोहावतिसुखदनवपियया
 रोपहिराय॥ १५॥ सखीलक्ष्मगांधासुभागभूषनसेवतिअंग॥
 सदाविभूषितआपतनजुगलमाधुरीरंग॥ १६॥ अलिसुलो
 चनाचित्रवितअंजनतिलकसमार॥ अंगरागसियलालक ॥२॥

रजीवतिलविष्टंगार ॥ १७ ॥ सखीवाराहोहरविभोजनजुगलन
 जिमाय ॥ प्रानप्राननीप्रानसुयरायतिप्रानलगाय ॥ १८ ॥ लन
 क्षमाणमनलक्षनगुनतिपुष्पविभनसाज ॥ विहसिविहसिप
 हिरायउरसियवह्नभमहाराज ॥ १९ ॥ सुभगासुभगासिरोम
 निसेजसोहाइसेव ॥ सियवह्नभसुयसुरतिरससकलजान
 साभेव ॥ २० ॥ अष्टसखीयेलालकीमुख्यजनाइजान ॥ अ
 लिनेवासइनकीमयामहलमाधुरीपान ॥ २१ ॥ इतिश्रीर

२६

भ्र. जा.
॥३॥

मज्जकीसखी ॥ श्रीप्रसादप्रसादनेसबसुख ध्यानप्रकास ॥ सियवस्त्रभ
ष्टंगाररसवारनेवुद्धिनेवास ॥ २२ ॥ प्रतउठैमनमासीकयाकरैनिज
अंग ॥ सखीस्वरूपवनायकरसदगुरुध्यानअभंग ॥ २३ ॥ श्रीप्रसादई
साजवैमंदिरकरैप्रवेश ॥ लालललाडिलीसैनसुखसुघरविचारैसेश
॥ २४ ॥ जवहिपलकउघरैकछूतवहिजगावैजाय ॥ बदनप्रखालैनी
रसोअंचलपोछेभाय ॥ २५ ॥ विथुरीअलकसुधारिकेभूषनवसन
समारि ॥ चहुओरतकियाधरैनिरवैकविवैठारि ॥ २६ ॥ मंगलभो

॥३॥

गअनेकविधिआनेरुचिअनुसार॥हरषिजिमावैइहकोनिजजल
 सौजनपार॥२७॥अचवनकरिकरिथारलैअवसयीछाजाय॥कृपा
 प्रसादप्रसादलैनाचिउठीगुणगाय॥२८॥सकलसौजकरिआरतीमं
 गलगायवजाय॥वलिहारीलैरूपकीजलवारैसुखपाय॥२९॥प्रथ
 मअंगसेवाकरैसौधेविविधिवनाय॥मंजनसौजमिलारिकेनीकेज
 लअरुवाय॥३०॥अंचलअंगअंगोछिकैसिंहासनपधराय॥नि
 लकप्रथमअंगारकरिपीछेविविधिवनाय॥३१॥पगजावकपगपा

श्रे. जा.
॥४॥

नधारनूपुरनवलनवीन॥कंकनकनकसोहावनोकटिकिंकिनिसुप्रवी
न॥३२॥लहंगातल्लिप्तसोहावनोपियकरिधोतीजानु॥कुचमंडल
घनसारदैकेशरसौधेआनु॥३३॥पदिकहारमाताविविधिकंठ
कंठवनाय॥मणिमणि॥कसुकुतातथा मनमातिपहिराय॥३४॥
छस्त्रामुदरीआगुरिनकंकराकराअमंद॥हस्तपानचूरीअपरपह
चीवाज्ज्वंद॥३५॥वागौबहतवनायकैफेटउपरनासाज॥सारीस
रीकंचुकीपहिरावैछविछाज॥३६॥चिवुकविन्दुकपोतपैचित्रविचि ॥४॥

ॐ नमः ॐ
त्र अनंत ॥ वीरि सुभगवना इदं अधर विलोक हृदंत ॥ ३७ ॥ नासानय
लटकनि अधरन सुधर सुधारे हाथ ॥ अलक भुका वै प्रेम सो निरयत
मैन सनाथ ॥ ३८ ॥ अवनतरो ना भूम कै वारी वार ताटेक ॥ मोती कुंड
ल फूल धर जगमगा द्विनि अति वंक ॥ ३९ ॥ लोचन अंजति अं
जनी सारै को मिल सार ॥ बहनी वान विचार कै चित वनि मोह निहा
र ॥ ४० ॥ शि को जरित लिलार पै अर्ध चंद्रिका मूल ॥ सुत्तरक्त म
णि को तिलक लाल भा ल अनुकूल ॥ ४१ ॥ वै ही वेनी वै गनी शी

अ. जा.

॥५॥

शफूलमनपात ॥ एकपेचामणिमुकुटधरवरज्जरावरकोत ॥ ४२ ॥
 कलगीतुररासुभगधारवेनीगंधवनाय ॥ नयशियसवष्टंगारक
 रिअपनेनैनरिभाय ॥ ४३ ॥ मणिमयसिंहासनसुभगकोमलव
 सनविछाय ॥ पधरावैतचलाडिलेनकियागेन्दलगाय ॥ ४४ ॥ श्र
 लपससरजमुखीचंद्रमुखीबहुनार ॥ रिभवनगायकजायकेपि
 यप्यारीनिजप्यार ॥ ४५ ॥ विविधिभोगष्टंगारकेपानकरावैनीर ॥
 परपरसावैहरवसौदेमुखरंजनवीर ॥ ४६ ॥ सकलसौजकरआर

॥५॥

तीगानतानभरभाय॥परिकरमादेजुगलपुनीचरनकमलशि
 रनाय॥४७॥सवसुषध्यानपुनीतअतिसदाकरैमनलाय॥जोग
 जज्ञतीरथवारतसोताकेसमनाय॥४८॥वाहिजपूजाजोकरैमन
 भरकैचहुओर॥चितउरभैविनकोलहैसियवस्त्रभनिजठौर
 ॥४९॥सवसाधनकेआसतजिआसामहस्तउपास॥तनगैकृपा
 साधनसुषदपागीअलीनेवास॥५०॥इतिश्रीशंभारपचीसिका
 पढैसुनैमनलाय॥सजगुरुचरणाप्रसादसोमहलमाधुरीपाय॥५१॥

अ. जा.

॥६॥

अथभोगपचीसी॥ श्रीप्रसाद्वरगुरुमया उरसिसगुणउपचार॥
 जयतिज्ञानकीरमरासुखवरनोभोगवित्तास॥५२॥ पाकभवन
 रचनारचेरुचिरतसमयविचार॥ सखिनसहिनसानंदभरिभा
 वभावनाधार॥५३॥ प्रथमसुगंधनसीचिमनमंदिरघुमडिसु
 वास॥ उचितवसनडासनविविधिचौकीअसनसुवास॥५४॥ वि
 विधिवित्तानसुत्तानतवसुयसुजानसबठान॥ प्रानजिवनसौआ
 निमनविनतीअमितवयान॥५५॥ पाकनिलयलीलातलित

॥६॥

ललनासकलसवोर ॥ चलहलालबलिजाह्रवराजभोगकी
 वार ॥ ५६ ॥ जवहिलाडिलीलाह्यजानसयीवनजान ॥ पधरावैच
 लिभावसौकरतिनिरतबहुगान ॥ ५७ ॥ हासकौतूहलकेलिसुखक
 रतिभवनपधराय ॥ सभाशृंगारउतारिपुनिनवशृंगारवनाय
 ॥ ५८ ॥ नवलभावनवरीतिसौनवसुखसौजदेवाय ॥ पधरावैचौ
 कीचतुरचौगुनचितमेचाय ॥ ५९ ॥ चयचाषनसौजनभरेभोज
 नभरिभरिथार ॥ भोगसकलआगेधरैजोजोरुचिसिष्यार ॥ ६० ॥

अ. जा
॥७॥

सरितनीरनारिनभरैभारीलैचहुऔर॥अथसयीवैठीनिकटदेति
 सुधारतिकौर॥६१॥केतिकभोगविहारसुषमावतिलैलैतान॥केति
 कवीनादिकलियेवाजेवजनसुजान॥६२॥केतिकनवनवसौजलैरुचि
 उपजावैआय॥केतिकस्वादसिहायदैलचिलचिलाडलडाय॥६३॥
 जेमनजवहीउसुधारवरउरवरहितवतराय॥करधारिकोरसुओरसु
 यरहैप्रानउरभाय॥६४॥भोगसमैरसकेलिसुषपियप्यारिपरपा
 र॥सौजलियेमिसभाववसमनहसिनैनडुंधांर॥६५॥अचवनक
 निहार

रिपटपरसिमुखवीरीसुभगवनाय॥सेयप्रसादादिकसारवीअधिका
 रिआपाय॥६६॥धूपदीपनवगंधसुचिवाजेरागसमेत॥समयआर
 तीहरविकरिजलपरवारसहेत॥६७॥परिकरमाजुगदंडवनगुरु
 अहइष्टसंकेता॥॥नृत्यगानकरिप्रानतनसियवह्नभपरवार॥ ६८॥
 सेजसदनमनसेजरचिसमयसरिससुवसाज॥हसिजनायपधरा
 यदोउसुमिरहुसुरतिसमाज॥६९॥पियप्यारीसुघरसरसैवसैसषी
 चहुओर॥दुगभोगीतनसुबलहेकपारहसिमतिवोर॥७०॥भोज

॥२॥ नभोगविहारसुखसदगुरसेयभ्रहार ॥ सदाभावनाभायवैससमयस
यभ्रनुसार ॥७१॥ सुरगानदगध्यानधरिजवलौप्रीतिविहार ॥ सुर
चित्तनुभिसामीपसुखिपुनिनवसौजसंवारि ॥७२॥ लाडसुभोगजे
मावहीलाडभ्रारतीसाज ॥ लाडलडावतिसेजसजिपहुडावैमहा
राज ॥७३॥ जुगलचरणासेवैसुखिददगप्राननसौलाई ॥ कोमलप
दप्रीतमपियाकोमलकरमनभाय ॥७४॥ सदाभावनालीनयहमी
नजथाजलप्यार ॥ औरसाधनासबननेभजैकपासुखसार ॥७५॥

॥२॥

॥५॥

॥३॥

भोगपचीसीपरमसुखपटनितप्रीतिप्रकाश॥भाईसनबाईरहस
 गाईकृपानेवास॥७६॥अथउद्यापनपचीसी॥श्रीप्रसादउरगुरु
 कृपासुमनिसदाहुलसाय॥सियवल्लभउठिसेजनेसभासमयसु
 षगाय॥७७॥सखीभायआयसुकृपासमयसमुक्तिसिरनाय॥
 करिप्रवेसमंदिरसुघरमधुरपायटिगजाय॥७८॥मधुरभाय
 करपदगहैकहैमधुरमुखवैन॥लहेलाहुलालनजवहिसहजउ
 धारहिनैन॥७९॥जगैजानिजलआनिसुखधोइसंभारेअंग॥
 भूषनवसनसुधारिसवसजिसिंगारनवअंग॥८०॥जावकादि

अ-जा.

॥८॥

अंगारगरचिचीरशीरसुभाय॥ भूषन अनगिन लाडिलेरुचि
 तेनेपहिराय॥ ८१॥ नवसिखसवष्टंगारचिसुषसुगंधसारसा
 य॥ भोगजुगलमनभावतेनीरनयोअचवाय॥ ८२॥ धूपदी
 पसजिआरतीगानबजंनवजंत॥ सधिसमाजसवसाजले
 चहुदिसिसवहिलसंत॥ ८३॥ आसपासफिरिवारमननवन
 करेसुषसान॥ सेवसधिनआरपायकैसेवैआयसुजान॥ ८४॥
 छत्रचमरसरजमुखीकरीदारबहुनार॥ सेवतिसकलसने
 हसुषसिखपियरुचिअनुसार॥ ८५॥ सभासमैआवैसकल॥

॥८॥

निजनिजभायप्रकाश॥ नृत्यगानकौतुकविपुलहाससौरा
 सविलास॥ ८६॥ सरउपवनभ्रागमसुखरमनपधारैलाल॥
 कुसुमसमैपगपागधरैसंगसखीकुविमात॥ ८७॥ मनउमंग
 रसंगसेविहरनवागविहार॥ अंगअंगकुविमाधुरीप्रफुलन
 यनमनप्यार॥ ८८॥ समयसरजलकेलिरुचिसुमनललित
 षंगार॥ सैनभोगसेवासकलसेवैसुजनसुधार॥ ८९॥ मनकीजा
 नसुजानपुनिआनिसिंगरसेचारि॥ सुखदजानचहप्रानप्रियस
 भासदनकीवार॥ ९०॥ सभासदनआनैसुभगसिंहासनपधार॥

श्र. जा.
॥१०॥

राय॥ जथा समय सुधिसाजसजिराजरीतभरपाय॥ ८१॥ अथ भ
वनकीसवसधीराजभवनदरसंत॥ निजनिजगुनसेवैसकलत
विद्धविदुगहुलसंत॥ ८२॥ गावतिगीतसोप्रीतिरतिकीरतिकरन
प्रकास॥ पंडितकविनटभाटलौसगुनप्रगप्रकास॥ ८३॥ सचिव
कोऊदरवारभरितेहीन्यावनिरवार॥ भायसकलसुखदिव्यसु
चिपूरनकृपाभंडार॥ ८४॥ इतीभावनामनधरैसंध्याभोगवना
य॥ विविधिस्वादरोचिकसमैसियपियहरयिजेमाय॥ ८५॥ सति
प्यायभ्रचवायपुनिकोमलपटपरसाय॥ पानमसालेसहितक

रिषीरीवदनववाय ॥ ८६ ॥ सौध अतरवहुगंधभरिधूपदीपकर
 धाम सुषदशब्दवहुवाजनेजैजैधुनिअभिराम ॥ ८७ ॥ कनक
 धारभरिआरतीकरकपूरवरवात ॥ वारतजुगलसरूपपरनिर
 षिवदनलजिजात ॥ ८८ ॥ गानकेलिकौनुकविविधिसंध्यासम
 पसंभार ॥ जलपरमनधनसुमनलैसियवह्नभपरवार ॥ ८९ ॥
 परिकरमाकरिदेडवनगुरुसधिइष्टसमेत ॥ कृपाप्रसादप्रसादलै
 यहनेवासउरहेत ॥ ९० ॥ एहीभावनाउरवसेनसैऔरसबआस ॥
 पंचवीशदोहाउठनिगायेकृपानेवास ॥ ९१ ॥ अथसैनपचीसी ॥

भ्र. जा.

॥११॥

जयति प्रसाद प्रसाद करि भरी भावना चित्त ॥ बैठक व्यास सैन सुख
 वरनौ सेवानित्त ॥ २ ॥ संध्या करि पुनिसंग सबरंग महल सुख साज ॥
 नव शृंगार उमंग भरि भ्रंग भ्रंग कुविछाज ॥ ३ ॥ सुख सिंहासन था
 पिमन भुज जुग भ्रंस निधार ॥ मिले प्रेम नन मन मिले मिले रूप
 शृंगार ॥ ४ ॥ सखी सकल सेवालिये चहुँदिसि जु पकरोर ॥ जीव
 तिलयि जुग माधुरी मानो चंद्र चकोर ॥ ५ ॥ वीना दिक बाजे बज
 तरागरंग घमड़न ॥ या सुख मे मन दीजिये रसिक भावना ठान ॥ ६ ॥
 रासरचित रास स्थली रासरसित सब संग ॥ रसिक रसीली सहज ॥ ११ ॥

सुधरासकेलिनवरंग॥७॥कबहुस्यामसियजूरमनिकबहु
 नचीनवगाय॥विविधिविनोदप्रमोदसुधरासरहससरसाय॥८॥
 शीभावनाधरिसुधरासमयसमुभिरुचिजान॥औरचेरच
 नसुधदव्यारूभोगप्रमान॥९॥भोजनविविधिप्रकारकेसवरे
 निवेभ्रान॥पैमिश्रितमाषनबहुजेमहिजुगलसुजान॥१०॥
 सतिलप्यायअचवायपुनिपटपरसैसुधपान॥धूपदीपकरि
 आरतीवारैतधनप्राप्त॥११॥रूपाआदिसवसधिनकोभुक्ति
 सेषअरपाय॥आपलहैसवसीतमनपुनिफिरिसीसनवाय॥१२॥

श्रु. ज.
॥१२॥

सेजसदनारचनाचैरितुसुखसेजवनाय॥सकलसौजकरिसु
रतिकीतुरतजनावेआय॥१३॥सवसमाजसेजुक्तकरिपिय
प्यारीप्रेमलडाय॥गायकजायभिहायतवसेजभवनपधराय
॥१४॥परशृंगारउत्तारिनवरतिशृंगारसेवारि॥सुकुमारीसुकुमा
रसुखसरसेसुरतिविहार॥१५॥लगभरोषनिध्यायपुनिटगभ्र
स्वादिकनाय॥चिदविलाससियलालकोपावनपलभ्रघाय॥१६॥
नवप्रकाररतिजुगलसुखसूक्ष्माकेलिकलिकलोल॥सुमति
विचारैरसिकनितभाविकविज्ञानमोल॥१७॥रुचिअनुसार॥१८॥

विहारसुखगुरुआयसुसंकेत॥ पुनिप्रवेससामीपकरसेजसमारे
 हेत॥ १८॥ सेनभोगरुचिमानजलपानकरैमुखपान॥ मधुरग्न
 नकरिआरतीवारुप्रनसुजान॥ १९॥ सेषसरिबिनआरपायलैसेज
 वनायसोहाय॥ सौरभतरधरसौजसवरितुसमवसनविछाय॥ २०॥
 मृदुलउसीसासीसतरकोमलचैलओछाय॥ चरणापलोटेभा
 यसोहरिषितभागसिहाय॥ २१॥ निजनिजसेवाअलिलगोपुनिप
 गुसदगुरुसेव॥ परमउपासकसोसहीजोयहजानैयभेव॥ २२॥
 पुरुसेवासेवेसदाविदानहोइछिनएक॥ अन्यसाधनातरकचि

न्य. जा.

॥१३॥

तब्रत अनन्य दृढ टेक ॥२३॥ अथ समय सुष भावना पर अन्न
 त श्रुति नेत ॥ तिन म सत दोहार चै मन सम भावन हेत ॥२४॥ इन मे
 जो कृत भ्राघरे पाठ करै नित प्यार ॥ कृपा जान की लाल की ल है
 महल अधिकार ॥२५॥ मया प्रसाद आस्वा र सुष ल ल्यो अनादि
 उपास ॥ र ल्यो घुम डिर सरा स उर क ल्यो प्रका स उपास ॥२५॥ इति
 श्री कृपा ने वा स जी कृत भावना सत क समा प्रम ॥ मिति आशि
 न स्तु क चं च म्यो र वी स म्बत १८४६ साल लिखा ए मा भिलाष
 शरण मो क म राम नगर घु ए नारा पठ नार्थि जन क जा शरण जी ॥१३॥

{ न्य. जा. रामायण रागा प. १३ }

रामायण